'याद जब आए तेरी...'

आपस की बात

राजकुमार केसवानी

हां तो दोस्तो, पिछली बार की छूटी अधूरी बात को आगे बढ़ाते हैं। मदन मोहन की याद को आगे बढ़ाते हैं। कहते हैं कि मदन जी महज़ एक नफ़ीस क़िस्म के गायक और संगीतकार ही नहीं थे। उनके शौक़ में बेहतरीन अंग्रेज़ी अंदाज़ के कपड़े पहनने से लेकर टेनिस खेलना और क्रिकेट जैसे खेलों की दीवानगी, घर पर दोस्तों की दावतें करना भी शामिल था। मतलब ज़िंदगी को भरपूर तरीक़े से जी लेने वाला अंदाज़। कमोबेश यही अंदाज़ उनके विविधता से भरे संगीत का भी है।

अगर आप एक नज़र उनके पूरे काम पर डालें, तो पाएंगे कि उनको याद भले ही उनकी ग़ज़लों के लिए किया जाता है, लेकिन उन्होंने अपनी तरफ़ से भरपूर वेराइटी दी है। ठेठ हिंदुस्तानी संगीत से भरे गीतों के साथ याद कीजिए उनके हल्के-फुल्के गीत। फिल्म 'मनमौजी' (1962) में किशोर कुमार का गाया **'ज़रूरत, ज़रूरत है श्रीमती की, कलावती की सेवा करे जो पति की'**। इसी फिल्म से कमल बारोट का **'मुर्गे ने झूठ बोला, मुर्गे की चूं-चूं हो गई'** 1956 की 'भाई-भाई' में किशोर का **'मेरा नाम अब्दुल रहमान, पिस्ते वाला मैं हूं पठान'**। ये सब मशहूर गीत हैं और ऐसे गीतों की भी एक बड़ी लिस्ट है।

लता मंगेशकर के साथ मदन मोहन और मदन मोहन के साथ लता जी का नाम तो हमेशा जुड़ा ही रहता है, लेकिन ज़रा बाक़ी गायकों के साथ भी उनका कमाल देखिए। मिसाल के तौर पर मन्ना डे। **'कौन आया मेरे मन के द्वारे, पायल की झंकार लिए'** और **'बैरन हो गई रैन...'** (देख कबीरा रोया,1957) **'हो सकता है कांटों से भी फूल की ख़ुशबू आए'** (दुनिया ना माने,1959), **'जब दिल में नहीं है खोट, तो फिर क्यों डरता है'** (बैंक मैनेजर,1959) और लता के साथ फिल्म 'चाचा ज़िंदाबाद' (1959), **'प्रीतम दरस दिखाओ...'**।

तलत महमूद-**'मेरी याद में तुम न आंसू बहाना'** (मदहोश,1951), **'मैं पागल मेरा मनवा पागल'** (आशियाना,1952), **'हमसे आया न गया, तुमसे बुलाया न गया'** (देख कबीरा रोया,1957), **'मैं तेरी नज़र का सुरूर हूं, तुझे याद हो कि न याद हो'**, **'तेरी आंख के आंसू पी जाऊं, ऐसी मेरी तकदीर कहां'** और **'फिर वही शाम, वही ग़म, वही तन्हाई है, दिल के समझाने तेरी याद चली आई है'** (जहांआरा, 1964)।

आशा भोंसले **'सबा से ये कह दो कि कलियां बिछाए'** (बैंक मैनेजर,1959), **'शोख नज़र की बिजलियां...'** (वो कौन थी,1964), **'थोड़ी देर के लिए मेरे हो जा'** (अकेली मत जइयो,1963)। बहुत लंबी लिस्ट हो जाएगी और स्पेस बहुत कम है, सो शॉर्ट में बात करते हैं न। बोले तो टु द पॉइंट।

मदन मोहन नहीं मुहब्बत मोहन

मदन मोहन के बारे में जितना ज़्यादा जानिएगा, उतना ही ज़्यादा आपको यक़ीन हो जाएगा कि वह शख़्स सर से पांव तक ख़ालिस मुहब्बत वाला इंसान था। गीतकार राजा मेहदी अली ख़ां, राजेंद्र कृष्ण हों या फिर कैफ़ी आज़मी, सबके साथ उनकी मोहब्बत वाले रिश्तों के अनेक क़िस्से हैं। संगीत के साथ शायरी की अच्छी समझ थी, सो गीतकारों से किसी तरह के कमतर लफ़्ज़ मंज़ूर नहीं थे। कहते हैं कि राजा मेहदी अली ख़ां तो उन्हें 'चिमटामार ख़ां' कहते थे। उसकी वजह यह थी कि गीतकार के साथ सिटिंग के दौरान वे एक चिमटा रखते थे और गीतकार को छेड़-छाड़ में चमकाते रहते थे।

अब ज़रा याद कीजिए इन लोगों की मुहब्बत के नतीजे। राजेंद्र कृष्ण-**'यूं हसरतों के दाग़, मुहब्बत में धो लिए, ख़ुद दिल से दिल की बात कही और रो लिए'**, **'उनको ये शिकायत है कि हम कुछ नहीं कहते'**, **'जाना था हमसे दूर बहाने बना लिए'** (लता, फिल्म : अदालत,1958)। **'याद जब आए तेरी, अपनी गुज़री ज़िंदगी, याद कर लेता हूं मैं, आह भर लेता हूं मैं'** (तलत महमूद, फिल्म : मोहर,1959)। इसी फिल्म से **'तुम हो साथ रात भी हसीं हैं, अब तो मौत का भी ग़म नहीं है'** (लता) से लेकर, आशियाना, मिनिस्टर, जेलर और 'जहांआरा' तक हर गीत यादगार है।

मुझे ख़ास तौर से इस जोड़ी की 1964 में अटक-अटक कर रिलीज़ हुई देव आनंद और मधुबाला वाली फिल्म 'शराबी' के गीत बहुत लाजवाब लगते हैं। शायद उनको उतनी दाद भी नहीं मिली, जितनी मिलनी चाहिए थी। **'सावन के महीने में इक आग-सी सीने में लगती है, तो पी लेता हूं, दो-चार घड़ी जी लेता हूं'** मुहम्मद रफ़ी की आवाज़ में ही इसके तीन वर्शन हैं और तीनों बेमिसाल हैं। इसी तरह **'मुझे ले चलो आज फिर उसी गली में जहां पहले-पहले ये दिल लड़खड़ाया'** और **'कभी न कभी, कहीं न कहीं, कोई न कोई तो आएगा, अपना मुझे बनाएगा'** हैं।

राजा मेहदी अली का नाम लीजिए, तो **'आपकी नज़रों ने समझा प्यार के क़ाबिल मुझे'**, **'है इसी में प्यार की आबरू, वो जफ़ा करें मैं वफ़ा करूं'**, **'जिया ले गयो जी मोरा सांवरिया'** (फिल्म : अनपढ़,1962) और **'अगर मुझसे मुहब्बत है, मुझे सब अपने ग़म दे दो'** (आप की परछाइयां, 64), कानों में गूंजने लगते हैं, मगर यह सफ़र काफ़ी लंबा और हसीन है। बाद के दौर में कैफ़ी आज़मी साहब के साथ भी उन्होंने 'हक़ीक़त', 'हंसते ज़ख्म', 'हिंदुस्तान की क़सम' और 'हीर-रांझा' जैसी फिल्मों का नायाब संगीत रचा।

मगर इन सबसे अलग दो लोगों का मदन जी से कमाल का रिश्ता था और इन दोनों का उनके संगीत में कमाल का योगदान था। पहले तो हैं मास्टर सोनिक। मतलब वही, जो बाद में संगीतकार जोड़ी सोनिक-ओमी के नाम से मशहूर हुए। दूसरे थे उस्ताद रईस ख़ान। मास्टर सोनिक मदन जी के संगीत के अरेंजर थे और रईस ख़ान साहब सितार वादक।

अब आप सिरे से याद कीजिए मदन जी के गीतों में सितार भरे गीत। **'मेरी याद में तुम न आंसू बहाना'**, **'हमसे आया न गया, तुमसे बुलाया न गया'** से लेकर 'दस्तक' के **'बैयां न धरो, ओ बालमा'** और **'हम हैं मता-ए-कूचा बाजार की तरह'** या फिर 'दुल्हन एक रात की' का **'मैंने रंग ली आज चुनरिया'**, कितने गाने याद करूं । बाप रे! भरे पड़े हैं। एक से बढ़कर एक।

अब आप कहेंगे कि अभी तक लता मंगेशकर की तो बात ही नहीं की। सही बोला। पर कितनी बार तो यह स्टोरी दुहराई जा चुकी है। शॉर्ट में मैं भी बोल देता हूं। लता मंगेशकर और मदन मोहन की पहली मुलाक़ात हुई सन् 1948 में। वह भी बतौर सह-गायक। मतलब संगीतकार मास्टर गुलाम हैदर के संगीत में दोनों को एक युगल गीत साथ गाना था। फिल्म में वह गीत तो नहीं आ पाया, लेकिन दोनों के बीच जो रिश्ता क़ायम हुआ, वह था भाई-बहन का। भाई-बहन की जोड़ी ने 50 से लेकर 70 के दशक तक ऐसे संगीत की रचना कर डाली कि आज तक दुनिया उसके जादू में खोई हुई है। अब गानों की लिस्ट तो रहने दो यार। ऊपर नीचे बहुत लिस्टिंग हो गया।

और...

और तो मदन जी की फिल्म 'अदालत' की ही गज़ल की एक लाइन है। **'कहने को बहुत कुछ था अगर कहने पे आते'**, सचमुच बहुत कुछ है कहने को, मगर भई लिमिट में बोलना पड़ता है न। सो बस एक आख़िरी बात। मैं मदन जी के गीतों में मदहोश करने वाली फुसफुसाहट वाली गायकी का दीवाना हूं। **'तुमसे कहूं इक बात परों सी हल्की-हल्की'** (दस्तक) और **'मेरी दुनिया में तुम आईं, क्या-क्या अपने साथ लिए'**।

बहरहाल, मैं तो अपने साथ कुछ नहीं लाया। खाली हाथ और दिल में करने को ढेर-सी बातें भर थीं। सो बातें-शातें तो हो गईं जी, कोई नहीं जी कोई नहीं। अगले हफ़्ते तक फिर भर जाऊंगा। फिर से शुरू करेंगे अपनी बात - आपस की बात।

जय-जय।

पता: ई-101/15, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र)

rkeswani100@gmail.com